अध्याय 11

नये राजा और साम्राज्य
(New Kings and Kingdoms)

भाग– I

सातवीं शताब्दी के बाद कई नए राजवंशों का उदय हुआ। मानचित्र 1 उपमहाद्वीप के अलग–अलग भागों में शासन करने वाले सातवीं और बारहवीं शताब्दी के शासकों को दर्शाया है।

* गुर्जर–प्रतिहारा, राष्ट्रकूट, पाला, चोला और चहामान(चौहान) को अंकित कीजिए।
* क्या आप वर्तमान राज्यों को पहचान सकते हैं, जिनपर उनका नियंत्रण था?

Map 1: Major Dynasties of Northern, Central and Eastern India, c.700-1100 CE

SCERT TELANGANA

नये राजवंशों का उदय (The Emergence of New Dynasties)

सातवीं शताब्दी तक उपमहाद्वीप के विभिन्न क्षेत्रों में प्रभावी जमींदार या योद्धा हुआ करते थे। तत्कालीन राजा उन्हें अपने अधीनस्थ या सामंत के रूप में मान्यता देते थे। उनसे यह उम्मीद की जाती थी कि वे अपने राजा या मालिकों के लिए तोहफे लाए, दरबार में हाजिर रहे और उन्हें सैनिक सहायता पहुंचाएँ। जैसे ही सामंतों को शक्ति और धन हासिल होती थी वे स्वयं को महा-सामंत, महा मंडलेश्वर (एक इलाके या भू-भाग के मालिक) घोषित कर देते थे। कभी-कभी तो वे स्वयं को अपने अधिपतियों से स्वतंत्र मान लेते थे।

इसी तरह की एक घटना दक्कन के राष्ट्रकूट में सामने आई। आरम्भ में वे कर्नाटक के चालुक्य के अधीनस्थ थे।

चित्र 11.1 विष्णु भगवान के नरसिंग रूप को दिखाते हुए एलोरा की 15वीं गुफा के भीतर एक चित्र। यह राष्ट्रकूट के समय की कला है।

आठवीं शताब्दी के मध्य में दंतिदुर्गा राष्ट्रकूट मुखिया ने अपने चालुक्य राजा को हराकर एक अनुष्ठान पूरा किया, जिसे हिरण्य-गरभा (अर्थात सुवर्ण गर्भ) कहते थे। जिसमें यह माना जाता है कि बलिदान करने वाले का पुनर्जन्म क्षत्रिय के रुप में होगा, भले ही वह जन्म से क्षत्रिय न हो।

* क्या आपको लगता है कि उस समय राजा बनने के लिए किसी एक वर्ण में जन्म लेना ज़रूरी था?

दूसरे मामलों में उद्यमी परिवार के साहसी व्यक्तियों ने सैनिक क्षमता के प्रयोग से अलग राज्य तैयार कर लिया। उदाहरण के तौर पर कदम्बा, मयूरशर्मन और गुर्जर-प्रतिहार, हरि चंद्र ब्राह्मण थे, जिन्होंने अपनी परंपरा को त्यागकर हथियार उठाते हुए कर्नाटक और राजस्थान में अपना साम्राज्य स्थापित किया।

प्रशस्ति और भूमि अनुदान (Prashasti and Land Grants)

शिलालेखों में स्तुति को प्रशस्ति कहते थे, जिसमें राजकीय परिवार जैसे, उनके पूर्वज और शासन काल की जानकारी होती है। इसमें शासक की उपलब्धियों का भी उल्लेख होता है। पर यह सब कुछ यह बताता है कि राजा अपना विवरण किस प्रकार करना चाहता था, उदाहरणतः शूरवीर, पराक्रमी योद्धा। इनकी रचना उन पढ़े-लिखे ब्राह्मणों की सहायता से होती थी, जो प्रशासन में सहायक होते थे।

नागभट्ट की उपलब्धियाँ (The Achievements of Nagabhata)

कई शासकों ने प्रशस्ति में अपनी उलब्धियों का वर्णन किया है।

संस्कृत में लिखी एक प्रशस्ति मध्य प्रदेश के ग्वालियर में पायी गयी, जिसमें प्रतिहार के राजा नागभट्ट के शोषण के बारे में निम्न प्रकर से वर्णन किया गया है:

आंध्र सैन्धावा (सिंध), विदर्भ (महाराष्ट्र) और कलिंग (उड़ीसा का हिस्सा) के राजा उसके सामने झुक गये, जब वे सिर्फ राजकुमार ही थे।

उन्होंने चक्रयुद्ध (कन्नौज के शासक) पर विजय प्राप्त की।

उन्होंने वेंगा के राजा (बंगाल का हिस्सा), आनार्ता (गुजरात का हिस्सा), माल्वा (मध्य प्रदेश का हिस्सा), किरात (वन्य लोग), तुरुष्का (तुर्क) वात्सा मत्स्या (उत्तर भारत के दो राज्य) को हराया।

इनमें से कुछ क्षेत्रों को मानचित्र – *1* में पहचानिए।

चित्र 11.2 - 9 वीं शताब्दी के द्वारा किए गए कार्यों को ताम्रपत्रों पर लिखा गया जो संस्कृत से थे। इन तामपत्रों को एक साथ रखने वाला रिंग रायल सील कहलाता था, जो दर्शाता था कि यह एक विश्वसनीय दस्तावेज है।

राजा अक्सर ब्राह्मणों व अन्य को पुरस्कार के रूप में भूमि दान दिया करते थे। भूमि का विवरण ताम्रपत्र पर लिखकर दान प्राप्त करने वाले को दिया जाता था।

बारहवीं शताब्दी में कल्हण नामक एक लेखक द्वारा संस्कृत की एक लंबी कविता की रचना की गयी, जिसमें कश्मीर पर शासन करने वाले राजा का इतिहास लिखा है, उन्होंने विभिन्न प्रकार के स्त्रोतों, लेखों, शिलालेखों साक्ष्यों तथा प्राचीन इतिहास का उपयोग किया। प्रशस्ति लेखको के समान इसमें शासकों और उनकी नीतियों की आलोचना भी किया करता था।

भूमि के साथ क्या-क्या दिया जाता था

यह तमिल वर्ग का एक भाग है, जिसमें चोलों द्वारा भूमि अनुदान दिया गया।

हमने जमीन पर निशान बनाकर तथा काँटेदार झाड़ों से सीमा निर्धारित की।

भूमि पर यह सब होते हैं - फलदार पेड़, पानी, जमीन, बगीचा, बाग, पेड़, कुँए, खुली जगह, चरवाह भूमि, गाँव, ऊंची ज़मीन, समतल भूमि, नहर, नदी, गड्ढे, भू-भाग, तालाब, प्लेकार्य भंडार, मछली मधुमक्खी के छत्ते और गहरी झील।

जिसे यह भूमि अनुदान में मिलती है वह इस पर कर भी वसूल सकता है। वह सैनिक अधिकारियों द्वारा लगाया कर वसूल सकता है। वह तम्बाकू, हथकरघे के कपड़े और वाहन पर भी कर वसूल सकता है।

वह बड़े कमरे बना सकता, पक्की ईंट से ऊपरी इमारत, छोटे कुँए और ज़रूरत पड़ने पर पेड़ और केटीली झाड़ियाँ लगा सकता है । काँटेदार झड़ियाँ लगवा सकता है। वह सिंचाई के लिए नहर बनवा सकता है। इस बात का ध्यान रखना जरूरी था कि पानी व्यर्थ न हो इसके लिए ऊँची दीवार बनायी जाती थी।

SCERT TELANGANA

* ऊपर बताये गये सभी शिलालेखों में दी गई सिंचाई स्रोतों की सूची बनायें और चर्चा करें कि इसका उपयोग कैसे हो सकता था?

राज्यों मेंा प्रशासन (Administration in the Kingdom)

इनमें से कई नये राजाओं ने बड़ी-बड़ी खिताबों पदवियों जैसे महाराजा -अधिराज (महान राजा, राजाओं के राजाधिराज) त्रिभुवन-चक्रवर्ती (तीनों लोक के राजा) आदि को अपनाया था। इन उपाधियों के बावजूद भी वे सामंत, ब्राह्मण, कृषक और व्यापारियों के साथ भी अपनी अधिकार बाँटते थे।

प्रत्येक राज्य में, संसाधनों के उत्पादक- जैसे कि कृषक, चरवाहे, कलाकारों और व्यापारी आदि पर दबाव डालकर अपने उत्पाद के हिस्से को बेचने के लिए कहा जाता था। कभी-कभी इन उत्पादों को किराये के रूप में अधीराज को देना पड़ता था, जो उस भूमि के अधिपति थे। व्यापारियों से भी कर वसूल करते थे।

इस साधनों का उपयोग राजा के भवनों, मंदिरों तथा किलों को बनाने के लिए किया जाता था। वे युद्ध भी किया करते थे। जिससे परिणाम स्वरुप श्रद्धांजलि के रूप में धन और व्यापार मार्ग के लिए भूमि का अर्जन किया जाता था।

साधारणतः आय वसूली के लिए सत्तारूढ़ परिवार के लोगों को नियुक्त किया जाता था, जैसे यह पद अक्सर प्रभावी परिवार और वंशानुक्रम में आते थे। यह बात सेना के लिए भी लागू होती थी। कई संदर्भों में यह पद राजा के रिश्तेदारों के पास ही होते थे।

* इस प्रकार की शासन व्यवस्था आज की प्रशासन व्यवस्था से किस प्रकार भिन्न थी?

सम्पति के लिए युद्ध (Warfare for wealth)

आपने यह देखा होगा कि इनमें से प्रत्येक राजवंश का एक विशिष्ट क्षेत्र था। उसी समय वे दूसरे क्षेत्रों को भी नियंत्रित करने का प्रयास करते थे। ऐसा ही एक क्षेत्र गंगा घाटी का कन्नौज था। कई वर्षों तक कन्नौज पर नियंत्रण पाने के लिए गुर्जर-प्रतिहार, राष्ट्रकूट और पाला राजवंश के शासकों ने लड़ाइयाँ लड़ीं। चूंकि नियंत्रण की इस लड़ाई में तीन शासक दल थे, इसीलिए इस लंबे युद्ध को इतिहासकार "तिहरा संघर्ष" भी कहते थे।

मानचित्र 1 देखकर कारण बतायें कि क्यों कन्नौज और गंगा घाटी पर शासक नियंत्रण करना चाहते थे?

महमूद गज़नी (Mahmud Gazani)

अफ़गानिस्तान के गज़नी के शासक सुल्तान महमूद ने 997 CE से 1030 CE तक शासन किया और मध्य एशिया, ईरान और उपमहाद्वीप के उत्तर-पश्चिमी हिस्से पर अपने नियंत्रण का विस्तार किया। वह हर वर्ष उपमहाद्वीप पर धावा बोलता था - उसके निशाने पर हिंदू मंदिर रहते थे, जिसमें गुजरात का सोमनाथ मंदिर भी शामिल था। महमूद द्वारा लूटे गए धन का प्रयोग अधिकतर गज़नी में एक भव्य राजधानी बनाने के लिए किया।

सुल्तान महमूद उन लोगों के बारे में भी अधिक जानकारी प्राप्त करने में रुचि रखता था, जिनपर उसने युद्ध में जीत प्राप्त की थी और अल-बिरुनी नामक एक विद्वान को उपमहाद्वीप का विवरण लिखने की जिम्मेदारी लाद दी। अरबी भाषा में किये गये इस कार्य को किताब अल-हिंद नाम से जाना जाता है, जो इतिहासकारों के लिए एक महत्वपूर्ण साधन है। अल-बिरुनी ने इस लेख को तैयार करने में संस्कृत विद्वान की सहायता ली।

चाहमन (चौहान) (Chahamanas)

चाहमनों, जिनको बाद में चौहान नाम से भी पहचाना जाने लगा, ने दिल्ली और अज़मेर क्षेत्र पर शासन किया। उन्होंने अपने नियंत्रण का विस्तार पश्चिम और पूर्व में करने का प्रयास किया, जहाँ उन्हें गुजरात के

SCERT TELANGANA

चालुक्य और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के गढ़वालों के विरोध का सामना करना पड़ा।

चाहमनों के प्रमुख शासकों में पृथ्वीराज III (1168 ई.–1192 ई.), प्रसिद्ध थे। जिन्होंने एक अफ़ग़ान शासक सुल्तान महमूद गौरी को 1191 ई. में हराया, लेकिन अगले वर्ष 1192 ई. में वे उससे हार गये।

मानचित्र पर फिर से निगाह डालें और चर्चा करें क्यों चाहमन अपनी सीमाएँ बढ़ाना चाहते थे?

भाग–II

चोल

अब हम दक्षिणी भारत पर एक निगाह डालेंगे।

चोल शासन दक्षिण का सबसे व्यवस्थित इतिहास रहा है। आइए देखते हैं वे कैसे सफल शासक बने।

मानचित्र 2 चोल साम्राज्य एवं इसके पड़ोसी राज्य

उरियार से तन्जावुर तक

चोल एक शक्ति के रूप में कैसे उभरे? मुतिय्यार नाम के एक छोटे से सैनिक परिवार ने कावेरी डेल्टा क्षेत्र में अपना नियंत्रण रखा। वे कांचिपुरम के पल्लव राजा के आधीन थे। विजयालय, जो उरियार के प्राचीन चोल सैनिक परिवार से थे, ने नौवीं सदी के मध्य में मुतियार के डेल्टा पर कब्जा किया। उसने तन्जावुर कस्बा बनाया और वहाँ निशुम्भासुदिनी माता का मंदिर बनवाया।

विजयालय के उत्तराधिकारियों ने पड़ोस के क्षेत्रों पर जीत हासिल की और राज्य के आकार और शक्ति में वृद्धि हुई। दक्षिण और उत्तर में पाड्यन तथा पल्लवों की सीमाओं को इस सम्राज्य का हिस्सा बनाया गया। राजराजा –1 सबसे शक्तिशाली चोल शासक माना जाता है। वह 985 ई. में राजा बना और उसने इनमेंह्नसे अधिकतर क्षेत्रों में

SCERT TELANGANA

चित्र 11.3 गंगईकोंडा-चोलापुरम का मंदिर। ध्यान दें कि किस तरह छत निर्मित की गई है। बाहरी दीवार को सजाने के लिए उपयोग किए गए पत्थर को देखिए। .

अपने आधिपत्य का विस्तार किया। उसने अपने सम्राज्य के प्रशासन को पुनः व्यवस्थित किया। राजराज के पुत्र राजेंद्र-1 ने उनकी नीतियों को जारी रखा और यहां तक गंगा घाटी, श्रीलंका और दक्षिणपूर्वी एशिया के देशों पर भी आक्रमण किया। इस तरह के आक्रमणों के लिए उन्होंने जल सेना विकसित की।

भव्य मंदिर और कांस्य मूर्तियाँ

तंजावुर और गंगईकोण्डा-चोलापुरम के राजराजा और राजेंद्र द्वारा बनाए गए मंदिरों में अद्भुत शिल्पकला और मूर्तिकला देखी जा सकती है।

चोल के मंदिर अकसर अपने चारों ओर के निर्णयों का केंद्र थे। यह कला के उत्पाद के केंद्र थे। इन मंदिरों को भूमि अनुदान के रूप में शासकों और अन्य लोगों से मिलती थी। इस भूमि से हुई पैदावार से मंदिर में कार्य करने वाले सभी लोग और कभी-कभी पास रहने वाले - पुजारी, फूलमाला बनाने वाले, रसोइए, सफाई करने वाले, संगीतकार, नर्तक इत्यादि, का भरण-पोषण किया जाता था। मंदिर न केवल पूजा-अर्चना का स्थान था, बल्कि आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन का केंद्र भी था।

चित्र 11.4 चोल कालीन कंस्य मूर्ति जिसका अलंकरण बड़ी सावधानी के साथ किया है।

मंदिर के साथ जुड़ी कलाओं में कांसे की मूर्ति तैयार करना सबसे विशिष्ट कार्य था। चोलों की कांसे की मूर्तियाँ विश्व की बेहतरीन मूर्तियाँ मानी जाती हैं। अधिकतर मूर्तियाँ भगवान की बनाई जाती थीं लेकिन कभी-कभी भक्तों की मूर्तियाँ भी बनाई जाती थीं।

कृषि और सिंचाई
(Agriculture and Irrigation)

चोल की अधिक उलपब्धियाँ कृषि में नई उन्नति के कारण संभव हो सकी। मानचित्र -2 को फिर से देखें। ध्यान दें कि बंगाल की खाड़ी में मिलने से पहले कावेरी नदी कई छोटी-छोटी धाराओं के रूप में बँट जाती है। इनमें अधिकतर बाढ़ आती है और उपजाऊ मिट्टी इनके किनारों पर इकट्ठा होती है। इनका पानी खेती के लिए आवश्यक नमी भी उलपब्ध कराता था, विशेषतौर पर धान की खेती के लिए।

SCERT TELANGANA

चित्र 11.5 तमिलनाडु में नवीं शताब्दी जलनिकासी फाटक यह एक तालाब के पानी को नियमित कर चैनल (Channel) को भेजता था। जिसके खेत की सिंचाई होती थी।

हालाँकि कृषि तमिलनाडु के दूसरे हिस्सों में पहले ही विकसित हो चुकी थी, केवल छठी या सातवीं सदी में यह क्षेत्र बड़े पैमाने पर खेती के लिए खुला। कुछ क्षेत्रों में जंगलों की कटाई करनी पड़ी, कुछ जगहों पर भूमि को समतल करना पड़ा। डेल्टा क्षेत्र में बाढ़ से बचने के लिए ऊंची दीवार बनाई गई और खेतों तक पानी पहुँचाने के लिए नहरों का निर्माण किया गया। कई क्षेत्रों में एक वर्ष में दो फसलें उगाई जाती थीं।

कई मामलों में खेतों में फसलों के लिए कृत्रिम तरीके से पानी पहुंचाया जाता था। सिंचाई के लिए विभिन्न तरीकों का उपयोग किया जाता था। कई जगहों पर कुएँ खोदे गये थे। अन्य स्थानों पर बारिश का पानी एकत्र करने के लिए विशाल टैंकों का निर्माण किया गया था। यह याद रखना जरूरी है कि सिंचाई के काम में योजना – मज़दूरों और संसाधनों को व्यवस्थित करना, इन कार्यों का रखरखाव करना और पानी कैसे बाँटा जाये, इस बारे में फैसला करना आवश्यक होता है। अधिकतर नए शासक एवं गाँव में रहने वाले लोगों ने इन कार्यों में सक्रिय रुचि लेते थे।

साम्राज्य का प्रशासन

(The administration of the Empire)

प्रशासन को कैसे व्यवस्थित किया जाता था? राजा के पास सहायता के लिए मंत्री परिषद होती थी। उसके पास ताकतवर सेना और नौसैना थी। साम्राज्य को मंडल तथा तालुकों में और फिर इन्हें वालानाडुओं और नाडुओं में विभाजित किया गया।

किसानों की समस्या के निबटारे को ऊरू कहा जाता है, जो कृषि सिंचाई के विस्तार के साथ उन्नत बन गये। इस तरह गांव के समूह की विशाल इकाई बनी, जिसे नाडु कहा जाता था। ग्राम परिषद् और नाडु ने कई प्रशासनिक कार्य किये, जिसमें न्याय करना और कर प्राप्त करना शामिल था।

वेल्लाला जाति के धनी किसानों का नाडु पर अच्छा नियंत्रण था, जिसे वे केंद्रीय चोल सरकार की निगरानी में करते थे। चोल राजाओं ने छोटे अमीर जमीनदारों को मुवेंदावेलन (वेलन या तीन राजाओं की

SCERT TELANGANA

सेवा करने वाला किसान), अरैय्यार (मुखिया), इत्यादि उपाधिया दे रखी थी और उन्हें केंद्र की ओर से राज्य में मुख्य कार्यालय सौंपा गया था।

भूमि के प्रकार (Types of Land)

चोल शिलालेखों में भूमि के कई प्रकारों का वर्णन किया गया है।

वालांवगाई – गैर ब्राह्मण किसानों की भूमि

ब्रह्मदेया – ब्राह्मणों को अनुदान में दी गई भूमि

बालाभोग– स्कूल को बनाए रखने की भूमि

देवदाना, तिरुनामाट्टुक्कानी– मंदिरों को भेंट की गई भूमि

पाल्लिच्छान्दम– जैन संस्थाओं को दान में दी गई भूमि।

हमने यह देखा कि ब्राह्मण अक्सर भूमि अनुदान या ब्रहादेय प्राप्त करते थे। इसका परिणाम यह हुआ कि कावेरी की घाटी में ब्राह्मणों का प्रवासन बढ़ने लगे विशेष कर भारत के दक्षिण में।

प्रत्येक ब्रह्मदेय देखभाल एक विशिष्ठ ब्राह्मण जमींदार की सभा करता था। वे सभाएँ बड़ी कुशलता के साथ जमींदारी का कार्य संभालने लगे। उनके निर्णय शिलालेखों व मंदिरों की दीवारों पर लिखे हुए देखे जा सकते हैं। नगरम नाम से ये व्यापारिक संस्थाएँ कस्बों में प्रशासनिक कार्य भी करती थी।।

सभा किस प्रकार आयोजित की जाती थी, इसका विवरण तमिलनाडु के चंगलपट्टु जिले में उत्तरमेरुर शिलालेख में है। सभा में सिंचाई, कार्य, चमन मंदिरों की सुरक्षा हेतु विशेष समितियाँ थीं। इन समितियों के सदस्यों के नाम ताड़ के पत्तों पर लिखे जाते थे। सभी पत्ते घड़े में डालकर एक छोटे बालक से एक–एक पत्ता निकलवाकर समितियाँ बनाई जाती थीं।

शिलालेख और लेख

सभा के सदस्य कौन होते थे, उत्तरा मेरूर शिला निम्न विषयों की जानकारी देता है।

सभा का सदस्य बनने के लिए कर युक्त भूमि का मालिक होना आवश्यक था। उसका अपना मकान भी होना आवश्यक था।

उनकी आयु 35 से70 वर्ष के बीच होनी चाहिए।

उन्हे वेदों का ज्ञान होना भी आवश्यक था ।

साथ ही शासन की जानकारी और ईमानदार पड़ता था।

यदि कोई सदस्य पिछले तीन वर्षो से किसी समिति में सदस्य रह चुका हो तो वह अन्य समिति का सदस्य नहीं बन सकता।

पिछला लेखा–जोखा और उनके सगे संबंधियों की विस्तृत जानकारी न बताने वाले और उनके सगे संबंधी चुनाव में भाग नहीं ले सकते

- क्या इन सभाओं में महिलाएँ भाग लेती थीं? इन समितियों के सदस्यों को लॉटरी के द्वारा चुना जाना कहाँ तक उपयोगी होगा? शिलालेख हमें राजाओं और शक्तिशाली व्यक्तियों के बारे में बताते हैं। यहाँ बारहवीं शताब्दी के तमिल भाषा में लिखित पेरियपुराणम शिलालेख के द्वारा यह पता चलता है कि राजा एवं शक्तिशाली योद्धाओं के साथ साथ सामान्य जनता का रहन सहन कैसा था।

SCERT TELANGANA

आदनुर गाँव के बाहरी क्षेत्र में **'पुलयास'** का एक छोटा उपग्राम था, जहाँ घास की छत के नीचे छोटी झोपड़ियों में कृषि श्रमिक रहते थे जो उनके मकानों के सामने मुर्गी के बच्चे झुंड में घूमते थे तथा लोहे के काले कड़े धारण किये हुए काले बच्चे छोटे शवाक से खेलते थे। एक महिला मजदूर अपने बच्चों को मरेडू (अर्जुन) पेड़ों की छाया के चमड़े के टुकड़ों पर सुलाती थी। वहाँ आम के वृक्ष भी थे जिनकी शाखाओं से डपलियाँ लटकते थे तथा नारियल के पेड़ों की छाया में जमीन के खोखल में कुतिया पिल्ले को जन्म देती थी। लाल कलगी वाले मुर्गे भोर होने से पहले हट्टे-कट्टे पुलैयार (Pulaiyar) को उनके काम के लिए पुकारते थे। और दिन में धान से भूखा निकालते समय कंजी पेड़ के नीचे घुँघराले बालों वाली पुलैय्या महिलाएँ गाना गाती थीं।

* गांवों में आयोजित सभी कार्यक्रमों का विवरण दीजिए

मुख्य शब्द :

1. सामंत 2. मंदिर 3.नाडु
4. सभा 5. राज्य 6. सुल्तान

हमने क्या सीखा?

1. त्रिपक्ष युद्ध में किस-किस ने भाग लिया?
2. चोल साम्राज्य में सभा समिति के सदस्य बनने के लिए कौन सी योग्यताएँ होनी चाहिए?
3. चाहमन शासकों के अधीन दो मुख्य नगर कौन से थे?
4. राष्ट्रकुट शक्तिशाली कैसे बने ?
5. जनता की स्वीकृति के लिए नए राज्यों ने क्या किया?
6. तमिल प्रांत में सिंचाई के विकास के लिए किस तरह के कार्य किये गये?
7. चोल राजाओं के मंदिरों से संबंधित कार्यक्रम कौन से थे?
8. उत्तरमेरूर के चुनाव एवं आज के पंचायत राज चुनाव में क्या अंतर है?
9. प्राचीन मंदिरों के चित्र एकत्रित कर अलबम बनाइे।
10. कृषि और सिंचाई शीर्षक के पहले दो अनुच्छेद पढ़िए और उस पर टिप्पणी कीजिए।

परियोजना कार्य:

1. मानचित्र 1 को देखकर यह बताइए क्या तेलंगाणा में कोई **साम्राज्य था**?
2. इस पाठ में **बताये गये** मंदिर तथा आपके प्रांतों में स्थित आज के मंदिरों की तुलना करके उसमें **समानता** और अंतर को बताइए
3. वर्तमान में वसूल किए जाने वाले करों का विवरण दीजिए क्या ये नगद अथवा वस्तु या **श्रम सेवा** के रूप में वसूल किए जाते है ?

SCERT TELANGANA